P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राथमिक स्तर के बालकों के आत्मसम्मान पर शिक्षक व्यवहार का प्रभाव : एक अध्ययन

नूतन गुप्ता
रिसर्च स्कॉलर,
शिक्षा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

तृप्ता त्रिवेदी
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मसम्मान पर उनके शिक्षक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक स्तर के 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 200 छात्र तथा 200 छात्रायें हैं। विद्यार्थियों के आत्मसम्मान को ज्ञात करने के लिये रोजेनवर्ग सेल्फ–एस्टीम स्केल का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्तांकों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट द्वारा किया गया है। अध्ययन के अनुसार विद्यार्थियों के आत्मसम्मान पर उनके शिक्षकों के व्यवहार का प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक स्तर, आत्मसम्मान, शिक्षक व्यवहार।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की हो उसमे अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि होती है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है, तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चहुं ओर विचरण करती है। अध्यापक को शिक्षा व्यवस्था के प्राण कहना भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवंत बनाता है। हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र, परिवर्तन व विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है ऐसी परिस्थिति मे अध्यापक का उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है। अध्यापक ही देश के भावी नागरिको अर्थात युवावर्ग के छात्र–छात्राओं के वास्तविक सम्पर्क से आता है उन्हें अपने आचार–विचार तथा ज्ञान के अवबोध से प्रभावित करता है। अध्यापकों के ऊपर ही राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास का सूत्रधार अध्यापक ही होता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों आदि को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी अध्यापक को वहन करनी होती है। वास्तव मे अध्यापकगण अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते है। इसलिए अध्यापक को सामाजिक अभियन्ता के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

विद्यालय मे कई प्रकार के शिक्षक मिलते हैं। कुछ बहुत प्रभावशाली तो कुछ बहुत कम प्रभाव वाले। शिक्षक की प्रभावशीलता उसके सामान्य तथा कक्षागत क्रिया कलापों पर आधारित होती है। ये क्रिया–कलाप शिक्षक के व्यवहारों की ओर संकेत देते हैं।

रेयन्स ने शिक्षक व्यवहार की जो परिभाषा दी है उसके दो प्रमुख अभ्युगम (Postulates) है–

शिक्षक व्यवहार सामाजिक व्यवहार है

रेयन्स के अनुसार शिक्षक व्यवहार एक सामाजिक व्यवहार है अर्थात शिक्षण प्रक्रिया मे सिखाने वाले (शिक्षक) के अतिरिक्त सीखने वाले (छात्र) का उपस्थित होना आवश्यक है, जिसके साथ शिक्षक सम्प्रेषण क्रिया (Communication) करता है और छात्रों को प्रभावित करता है। शिक्षक–छात्र के मध्य व्यवहार पारस्परिक होता है। अतः न केवल शिक्षक ही छात्रों के व्यवहार को प्रभावित करता है बल्कि छात्र भी शिक्षक–व्यवहार को प्रभावित करते है।

शिक्षक व्यवहार सापेक्षिक है

शिक्षक कक्षा मे जो कुछ भी करता है वह सामाजिक परिस्थिति का परिणाम है, जिसमे शिक्षक पढ़ाता है। शिक्षक का व्यवहार अच्छा है या बुरा, सही है या गलत, प्रभावशाली है या प्रभावहीन, इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक का व्यवहार, छात्र उपलब्धि का प्रकार, अपेक्षित शिक्षण–विधियाँ किस सीमा तक उस संस्कृति के मूल्यों के साथ अनुरूपता रखती है, जिसमें वह रहता है तथा जिसके लिए वह भावी पीढ़ी को तैयार कर रहा है।

आत्म सम्मान

आत्म सम्मान समाज मे दृष्टिकोण और विश्वासों का समूह है जो व्यक्ति अपने साथ लाता है। इसमें व्यक्ति यह सोचता है कि वह सफलता या विफलता की उम्मीद कर सकता है या नही, कितना प्रयास किया जाना चाहिए, किसी कार्य मे विफलता उसे चोट पहुंचायेगी या वह विभिन्न अनुभवों के परिणामस्वरूप अधिक सक्षम हो जायेगा।

मनोवैज्ञानिक शब्दों मे, ''आत्म सम्मान एक मानसिक स्थिति है जो व्यक्ति को सफलता स्वीकृति और व्यक्तिगत शक्ति की अपेक्षाओं के अनुसार प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार करता है।''

आत्म सम्मान एक अवधारणा है जो एक व्यक्ति मे अपने स्वयं के सम्बंध मे होता है। जिसमें एक मूल्यांकन होता है या जो भी उसके बारे मे है– असल में व्यक्ति स्वयं के बारे मे जो सोचता है वह उस व्यक्ति के सम्बंध मे उस व्यक्ति का दृष्टिकोण और उसकी भावनाओं को प्रदर्शित करता है । आत्मसम्मान का तात्पर्य है कि व्यक्ति द्वारा स्वयं के मूल्य और गुणवत्ता को जिस तरह से वह खुद को देखता है।

इस दृष्टिकोण के साथ किसी समस्या की सफलता पर आत्म सम्मान आकस्मिक बन जाता है यह अन्तर्निहित अस्थिरता का पर्याय है क्योंकि किसी भी क्षण विफलता हो सकती है। 1960 के दशक के मध्य मे मॉरिस रासेनबर्ग और सामाजिक शिक्षण सिद्धान्तकारों ने व्यक्तिगत मूल्य या योग्यता के स्थिर भावना के सन्दर्भ मे आत्म सम्मान को दशक किया।

1969 मे नथानियल ब्राण्डेन ने आत्मसम्मान को परिभाषित किया, ''आत्म सम्मान, जीवन की बुनियादी चुनौतियों का सामना करने और खुशी के योग्य होने के लिए सक्षम होने का अनुभव है।''

कोहन, ए0 आर0(1959), स्कॉटलैंड ई(1961) के अनुसार, ''आत्मसम्मान व्यक्तियों के अपने मूल्य और क्षमताओं का मूल्यांकन है उन्होंने सुझाव दिया कि एक व्यक्ति का आत्म सम्मान किसी विशेष स्थिति मे उसके प्रदर्शन पर मूल्यांकन को प्रभावित करता है। उच्च आत्म सम्मान का व्यक्ति उस मूल्यांकन को प्रभावित करता है। जो वह किसी विशेष स्थिति मे प्रदर्शन करता है और सफलता की उम्मीद के साथ प्रतिक्रिया दे सकता है। जबकि कम आत्म सम्मान वाले लोगों मे असफलता की अपेक्षा हो सकती है।

जब लोग अपने माता–पिता के प्रति स्नेही होते हैं और उनके साथ शामिल होते हैं तो व्यक्ति खुद को सकारात्मक रूप से देखने की अधिक सम्भावना रखते हैं। दुनिया भर में, जब व्यक्ति सद्भाव से रहते है और माता पिता अपने बच्चों के लिए सहायक होते हैं तो व्यक्तियों का आत्म सम्मान उच्च होता है।

आम तौर पर, जब छात्र अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं, स्कूलों मे कड़ी मेहनत करते हैं, अपने साथियों के साथ मिलते हैं और अनुशासनात्मक समस्याओं से बचते हैं, तो आत्म सम्मान अधिक होता है।

इसके अलावा छात्रों में आत्म सम्मान अधिक होता है जब–

1. वह संगीत, छात्र परिषदों, खेल और क्लब, अतिरिक्त पाठ्यचर्या गतिविधियों मे भाग ले।
2. स्कूल का समग्र वातावरण पोषण कर रहा हो।
3. शिक्षक छात्र के बारे मे परवाह करते हों और उन्हें सुनते हों।

यह महत्वपूर्ण है कि माता–पिता और शिक्षक छात्र के आत्म सम्मान को बढ़ाने के लिए प्रयास करे क्योंकि कम आत्म सम्मान वाले छात्रों को कई विकास सम्बंधी समस्याओं का खतरा है कम आत्म सम्मान वाले छात्रों को साथियों के साथ समस्या होने की अधिक सम्भावना होती है और वे अवसाद जैसे मानसिक विकास से ग्रसित हो जाते है जो खराब अकादमिक प्रदर्शन का कारण बनता है। शिक्षक छात्रों को उनकी योग्यतानुसार काम करने और उनकी प्रगति मे रूचि रखते हुए प्रोत्साहित करके उसके आत्मसम्मान को बढ़ा सकता है। माता–पिता भी ऐसा कर सकते है। आत्म सम्मान, गणित पढ़ने और सामाजिक और शारीरिक कौशल में स्कूल मे प्रदर्शन से कुछ अलग नहीं है। यह प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है। आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की भावना स्कूल के प्रदर्शन मे उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि वे जीवन के अन्य क्षेत्रों मे हैं।

कुसुसेंटो, प्रियदी; इस्माइल हेयरूल निजाम; जमील हजरी (2010) ने अपने अध्ययन ''छात्रों के आत्म–सम्मान और शिक्षक व्यवहार की उनकी धारणाः कक्षा योग्यता समूह के बीच का अध्ययन'' में बताया कि शिक्षकों के व्यवहार पर छात्रों की धारणा को दो श्रेणियों मे विभाजित किया गया था। अनुशासनात्मक मामलों से बचने और छात्रों की अकादमिक उपलब्धियों का समर्थन करने के लिए छात्रों के व्यवहार को नियंत्रित करना। इस अध्ययन में भाग लेने के लिए चार सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयों के 302 छात्रों का चयन किया गया। छात्रों के आत्म सम्मान स्तर को रोसेनबर्ग सेल्फ–एस्टीम स्केल का उपयोग करके मापा गया था। मीन और टी–टेस्ट का इस्तेमाल दो समूहों के बीच आत्मसम्मान के अन्तर के साथ–साथ दो समूहों के बीच शिक्षकों के व्यवहार पर छात्रों की धारणा के अंतर का विश्लेषण करने के लिये किया गया था। छात्रों के आत्म–सम्मान पर, शिक्षकों के व्यवहार पर, छात्रों की धारणाओं का प्रभाव कई प्रतिगमन के साथ विश्लेषण किया गया था। परिणाम दिखाते हैं कि उच्च प्राप्तकर्ता समूह के छात्रों ने कम प्राप्तकर्ता समूहों के छात्रों की तुलना में आत्म सम्मान में काफी अधिक स्कोर किया है। उच्च और निम्न प्राप्तकर्ता समूहों मे छात्रों के बीच शिक्षकों के व्यवहार पर धारणा में एक महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। उच्च प्राप्तकर्ता समूहों के छात्रों ने अपने शिक्षकों को अधिक सहायक माना, जबकि अन्य समूहों ने अपने शिक्षकों को अधिक नियंत्रण करने के लिए माना।

शोध की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता

बाँदा जनपद के लिए कोई भी सामाजिक आर्थिक अनुसंधान निश्चित रूप से जीवित सत्य को उदघटित करने का प्रयास है। उत्तर प्रदेश का बाँदा जनपद आज भी सामाजिक आर्थिक विकास के लिए निम्नस्तर पर है। बाँदा जनपद मे सामाजिक विकास के

लिए निश्चित रूप से शैक्षिक विकास एवं शैक्षिक स्तर मे तीव्रतर वृद्धि की आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षा ऐसा आधार है। जिस पर देश तथा इसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या का कथन निम्नलिखित है–

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मसम्मान पर शिक्षक व्यवहार का प्रभाव : एक अध्ययन।

शोध का उद्देश्य

प्रत्येक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक शोध समस्या मे कतिपय उद्देश्य होते है। प्रस्तावित शोध अध्ययन के कतिपय उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का निम्न चरों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

a. क्षेत्र आधार
b. लिंग आधार

परिकल्पना

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध केवल उ0प्र0 के बाँदा जिले के विद्यार्थियों पर किया गया है। प्रस्तावित शोध केवल प्राथमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान मे रखकर शोधकत्री द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे शोधकत्री ने उत्तर प्रदेश के जनपद बाँदा के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों को समष्टि के रूप मे लिया है। समष्टि का प्रकार परिमित है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु बाँदा जिले के प्राथमिक स्तर के चयनित 20 विद्यालयों से सम्भावित प्रतिदर्शन की स्तरीकृत यादृच्छीकृत प्रतिदर्शन चयन विधि से 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमें 200 छात्र व 200 छात्रायें है।

शोध अध्ययन मे प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आत्म–सम्मान ज्ञात करने हेतु रोजेनवर्ग सेल्फ–एस्टीम स्केल का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

उपकरण से प्राप्त प्राप्तांकों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट एवं सहसम्बंध की गणना कर किया गया है तथा पाई–चार्ट के द्वारा आँकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

विश्लेषण

प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालकों के आत्म सम्मान का अध्ययन करना–

(क) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान का अध्ययन

तालिका–(क)

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान की प्रतिशतता

आत्म सम्मान	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	47.5	40	12.5
छात्र 200	95	80	25

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या–(क) मे प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के 200 विद्यार्थियों के आत्म सम्मान मापनी पर प्राप्त प्रदत्तों का अध्ययन प्रतिशत द्वारा कर उनका विश्लेषण प्रदर्शित किया गया है। प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान में विद्यार्थियों के उच्च स्तर का प्रतिशत 47.5 है। औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत 40 है। निम्न स्तर के विद्यार्थियों का प्रतिशत 12.5 है।

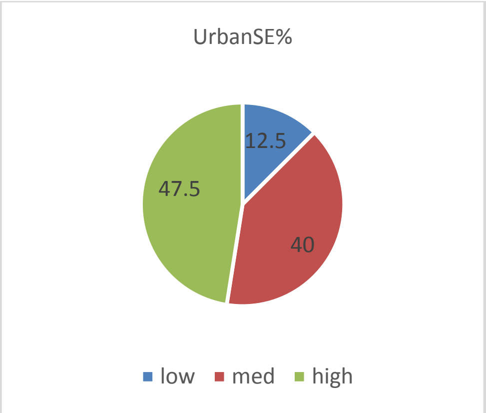

पाई.चार्ट–(क)

व्याख्या

उपरोक्त परिणाम यह इंगित करते है कि 47.5 प्रतिशत (95) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का आत्म सम्मान उच्च पाया गया जबकि 40.0 प्रतिशत (80) औसत और 12.5 प्रतिशत (25) विद्यार्थियों मे निम्न पाया गया ।

(ख) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान का अध्ययन

तालिका सं0–(ख)

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान की प्रतिशतता

आत्म सम्मान	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	10	79.5	10.5
छात्र 200	20	159	21

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या–(ख) मे प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के 200 विद्यार्थियों के आत्म सम्मान मापनी पर प्राप्त प्रदत्तों का अध्ययन प्रतिशत द्वारा कर उनका विश्लेषण प्रदर्शित किया गया है। प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान के उच्च स्तर का प्रतिशत 10 है। औसत का प्रतिशत 79.5 है। निम्न स्तर का प्रतिशत 10.5 है।

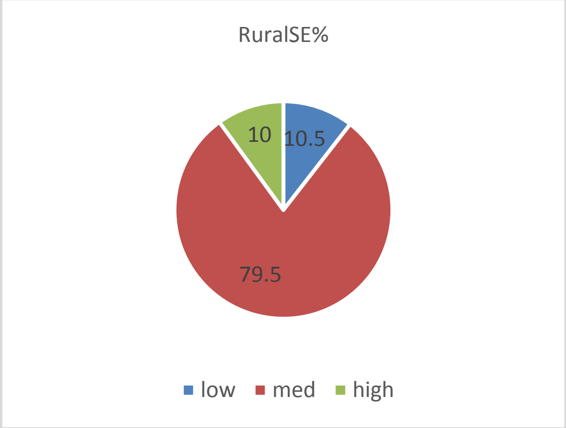

पाई.चार्ट–(ख)

व्याख्या

उपरोक्त परिणाम यह इंगित करते है कि प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत विद्यार्थियों में 10 प्रतिशत (20) का आत्म सम्मान उच्च पाया गया जबकि 79.5 प्रतिशत (159) औसत और 10.5 प्रतिशत (21) विद्यार्थियों में निम्न पाया गया ।

(ग) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालकों के आत्म सम्मान का अध्ययन

तालिका सं0–(ग)

प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालकों के आत्म सम्मान की प्रतिशतता

आत्म सम्मान	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	28.0	58.5	13.5
छात्र 200	56	117	27

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या–(ग) मे प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालकों के आत्म सम्मान मापनी पर प्राप्त 200 बालकों के प्रदत्तों का अध्ययन प्रतिशत द्वारा कर उनका विश्लेषण प्रदर्शित किया गया है। प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के आत्म सम्मान में छात्रों के उच्च स्तर का प्रतिशत 28 है। औसत छात्रों का प्रतिशत 58.5 है। निम्न स्तर के छात्रों का प्रतिशत 13.5 है।

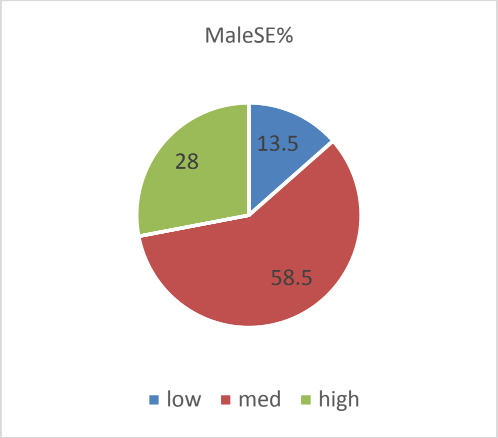

पाई.चार्ट–(ग)

व्याख्या

उपरोक्त परिणाम यह इंगित करते है कि 28 प्रतिशत (56) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालकों का आत्म सम्मान उच्च पाया गया जबकि 58.5 प्रतिशत (117) औसत और 13.5 प्रतिशत (27) बालकों मे निम्न पाया गया।

(घ) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालिकाओं के आत्म सम्मान का अध्ययन

तालिका–(घ)

प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालिकाओं के आत्म सम्मान की प्रतिशतता

आत्म सम्मान	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	29.5	61	9.5
छात्रा 200	59	122	19

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या–(घ) मे प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालिकाओं के आत्म सम्मान मापनी पर प्राप्त 200 बालिकाओं के प्रदत्तों का अध्ययन प्रतिशत द्वारा कर उनका विष्लेशण प्रदर्शित किया गया है। प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालिकाओं के आत्म सम्मान में छात्राओं के उच्च स्तर का प्रतिशत 29.5 है। औसत छात्राओं का प्रतिशत 61 है। निम्न स्तर के छात्राओं का प्रतिशत 9.5 है।

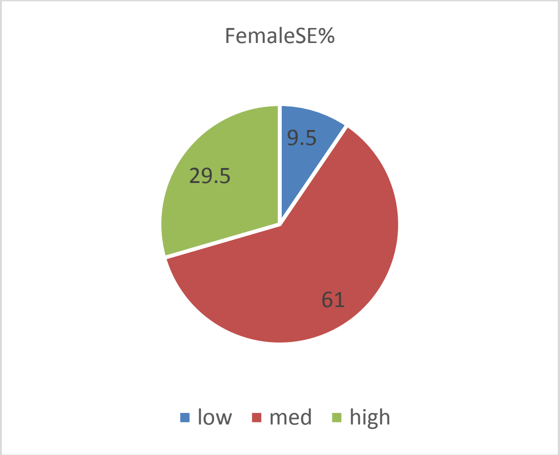

पाई.चार्ट–(घ)

व्याख्या

उपरोक्त परिणाम यह इंगित करते है कि 29.5 प्रतिशत (59) प्राथमिक स्तर मे अध्ययनरत बालिकाओं का आत्म सम्मान उच्च पाया गया जबकि 61.0 प्रतिशत (122) औसत और 9.5 प्रतिशत (19) बालिकाओं मे निम्न पाया गया ।

2.प्राथमिक स्तर के बालकों के आत्म सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(क) प्राथमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं के आत्म सम्मान का उनके क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका सं0–(क)

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता
शहरी	200	23.5	4.83	5.59	0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
ग्रामीण	200	21.07	3.80		

परिकल्पना

प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बालक व बालिकाओं के आत्म सम्मान मे सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के बालकों के आत्म सम्मान का मध्यमान 23.5 एवं मानक विचलन 4.83 है। ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के आत्म सम्मान का मध्यमान 21.07 एवं मानक विचलन 3.80 है। जिनका टी–परीक्षण मान 5.59 है। जोकि डीएफ–198 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान 1.98 से अधिक है। अतः परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बालकों व बालिकाओं के आत्म सम्मान मे सार्थक अन्तर है।

(ख) प्राथमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं के आत्म सम्मान का उनके लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका सं0–(ख)

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता
पुरूष	200	22.16	4.66	0.34	0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।
महिला	200	22.41	4.35		

परिकल्पना

प्राथमिक स्तर पर बालकों व बालिकाओं के आत्म सम्मान मे सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित होता है कि प्राथमिक स्तर पर बालकों के आत्म सम्मान का मध्यमान 22.16 एवं मानक विचलन 4.66 है। बालिकाओं के आत्म सम्मान का मध्यमान 22.41 एवं मानक विचलन 4.35 है। जिनका टी–परीक्षण मान 0.34 है। जो कि डीएफ–198 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। अतः परिकल्पना को स्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं के आत्म सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षक व्यवहार का उनके विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन करना था, प्राप्त परिणाम स्पष्ट रुप से इंगित करते हैं कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो पर उनके शिक्षको के व्यवहार की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर उनके शिक्षको के व्यवहार का प्रभाव अधिक पड़ता है। जबकि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध द्वारा शिक्षकों के व्यवहार को विद्यार्थियो के अनुरुप बनाये जाने में सफलता प्राप्त हो सकेगी व बच्चो की तरफ शिक्षकों की प्रतिबद्धता को बढ़ा कर छात्र–छात्राओं के मध्य व्याप्त अंतर समाप्त कर विद्यार्थियों को मित्रो, परिवार, समाज विद्यालय एवं स्वयं के साथ उचित तत्सम सामंजस्य को विकसित करने हेतु प्रेरित किया जा सकेगा और विद्यालय, शिक्षकों तथा विद्यार्थी के मध्य उचित शैक्षिक और गैर शैक्षणिक वातावरण स्थापित किया जा सकेगा। शिक्षकों के व्यवहार का प्रभाव सर्वाधिक विद्यार्थी पर ही पड़ता है। वह जो देखता है, सुनता है उसी का अनुकरण करता है। अतः शिक्षकों के व्यवहार और विद्यार्थी के मध्य अभीष्ट सम्बन्ध के महत्व को समझ कर विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन, शिक्षा के क्षेत्रों में आवश्यक परिमार्जन कर शिक्षक तथा विद्यार्थी के मध्य उचित शैक्षिक वातावरण स्थापित किया जा सकेगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. *Best, J.W. & Kahn, V. (2006). Research in Education, New Delhi: Pearson Pretice Hall.*
2. *Buch, M.B. (1988-92). Fifth Survey of Research in Education. New Delhi: NCERT.*
3. *Mulder, S. (2008). The domains that influence the development of social competence in children: A literature review. M.Sc. in school psychology, The graduate school, university of Wisconsin – Stout.*
4. *Research in Education: N.C.E.R.T. Publication*
5. *Sutherland, S. Kevin and Donald Oswold(2005). The relation ship between teacher and student behavior in class room for student with emotional and behavioural: Transaction process journal of child and family studies, 14(1) March 2005, 1-14.*
6. *लाल, आर0बी0 (2008). शिक्षामनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी, मेरठः आर0लाल बुक डिपो।*
7. *http://Sodhganga.inflibnet.ac.in*
8. *http://www.educationindia.net*